RESEARCH INQUIRY
(An International Peer Reviewed Multidisciplinary Referred Research Journal)
Impact Factor :
ISSN

सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

डॉ. अरविंद कुमार मौर्य
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग, नागरिक पी.जी. कालेज, जंघई, जौनपुर
हीरा लाल यादव
शोधार्थी, शिक्षक–शिक्षा विभाग, नागरिक पी.जी. कालेज, जंघई, जौनपुर

सारांश : शिक्षा मानव जीवन के उत्थान तथा सफलता का मूल साधन है। इसके द्वारा ही मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिमार्जन किया जा सकता है। उचित शिक्षा एवं निर्देशन द्वारा छात्र–छात्राओं के सामाजिक और आर्थिक स्तर के अनुरूप शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति की आशा की जा सकती है। शिक्षा क्षेत्र का विद्यार्थी होने के कारण तथा प्राप्त अनुभवों एवं उपरोक्त आवश्यकता को देखते हुए शोधार्थी द्वारा अध्ययन हेतु सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक और आर्थिक स्तर के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रमुख शब्द : शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति, सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थी, सामाजिक –आर्थिक स्तर।

भूमिका

"ज्ञानम् मनुंजस्य तृतीय नेत्रम्" अर्थात् ज्ञान मनुष्य का तृतीय नेत्र है जिसके द्वारा वह समाज में व्याप्त अच्छाइयों और बुराइयों को जानकर अच्छाइयों को अपनाता है और अपने अन्दर के बुराइयों को दूर करता है। मानव को समाज में अपनी स्थिति को बनाये रखने के लिए और उसके साथ लाने के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है।[1] बिना शिक्षा के मनुष्य एक निरीह पशु के समान है जो पृथ्वी पर पैदा होता है यहाँ कुछ समय तक विचरण करता है और इस दुनिया से चला जाता है। उसका इस समाज में इस देश में कोई भी योगदान नहीं रहता है और न ही ऐसे व्यक्ति की कोई जीवनी ही होती है। केवल शिक्षा ही व्यक्ति के उन्नयन का मुख्य स्रोत है जिसके माध्यम से व्यक्ति की आन्तरिक क्षमताओं का उन्नयन करके उसके कौशल को सुधारा जाता है और व्यवहार में परिमार्जन की सहायता से उसे जिम्मेदार नागरिक में परिणित किया जाता है। जिससे वह अपने ज्ञान कला और कौशलों के माध्यम से अपना विकास करते हुए इस समाज और देश के विकास में अपना योगदान दे सके। एक अशिक्षित एवं असभ्य व्यक्ति से हम इस समाज या देश के विकास या किसी भी प्रकार के विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं। वह इस पृथ्वी पर केवल भार स्वरूप ही रह जाता है। शिक्षा व्यक्ति समाज एवं देश तीनों के लिए अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि किसी भी देश का भविष्य उसके समाज पर निर्भर करता है। जिस देश का समाज जैसा रहेगा वैसा ही देश बनता है और समाज बनता है व्यक्ति से, इसलिए एक अच्छे समाज के लिए अच्छे व्यक्तियों का होना जरूरी है इसलिए सभ्य शिक्षित एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों का निर्माण करना समाज का कर्तव्य है जिससे एक स्वस्थ और विकसित समाज का निर्माण हो तब जाकर एक विकसित राष्ट्र का निर्माण हो पायेगा।

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो समाज को बनाये रखने तथा उसके विकास के लिए अति आवश्यक है। जिस प्रकार एक पौधे को विकसित होने के लिए खाद्य एवं पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मनुष्य के विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का सामाजीकरण होता है। शिक्षा के द्वारा ही संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तानान्तरण होता है तथा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक समस्याओं का समाधान भी किया जाता है। शिक्षा सामाजिक नियन्त्रण का एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त साधन है।[2]

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है।[3] शिक्षा के रूप में मानव के व्यवहार, ज्ञान, कला एवं कौशलों में वृद्धि एवं परिवर्तन किया जाता

है। प्रत्येक प्राणी में अपने वातावरण में समायोजन की प्रवृत्ति होती है क्योंकि वह जीवित रहने की लालसा लिए अपने चतुर्दिक वातावरण में व्याप्त अनियमितताओं से संघर्ष करता रहता है। वह अपने वातावरण के साथ निरन्तर संघर्षरत रहता है। उसके सारे आचार–विचार, संस्कृति–सभ्यता, संघर्ष जनित अनुभव ही तो हैं। वह संघर्ष करता है उससे वह निष्कर्ष निकालता है ये निष्कर्ष उसके अनुभवों के कोष में जुटते रहते हैं। प्रत्येक आने वाली पीढ़ी इन्हीं अनुभवों का लाभ उठाती है। भारतीय चिन्तन परम्परा में सृष्टि के आरम्भ से ही 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की अवधारणा प्रधान रही है।[4]

वैदिक काल से ही भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का स्रोत है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को सच्चे मार्ग का प्रदर्शन करता है।[5] सत्य कथन है कि ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समस्त तत्वों को समझने में समर्थ बनाता है तथा उसे सही कार्यों में प्रबल करता है। विद्या से विनय व शील का विकास होता है शंकराचार्य ने कहा है ''सा विद्या या विमुक्तये''[6] इसका तात्पर्य जड़ता, अहंकार तथा मानसिक दासता से ऊपर उठकर व्यक्ति को चौतन्य विजयी तथा स्वतन्त्रा विचारक बनने से है।

शिक्षा केवल रोजी रोटी का साधन ही नहीं अपितु मानवीय मूल्यों तथा वास्तविक स्वरूप को मनुष्य के सामने रखने का एक सर्वोत्कृष्ट साधन है। शिक्षा का सम्बन्ध सम्मिलित रूप से मनुष्य के मानसिक, आत्मिक, शारीरिक और सामाजिक पक्ष से है। ईश्वर की सृष्टि में मनुष्य सर्वोत्कृष्ट जीव है और उसी सर्वोत्कृष्ठता में हेतु है शिक्षा। अतः व्यक्ति को प्रारम्भिक स्तर से ऊपर उठाने के लिए अध्ययन के सतत प्रक्रिया अर्थात् शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। इससे व्यक्ति को ऐसी शक्ति प्राप्त होती है जिसकी सहायता से वह जीवन की समस्याओं का उचित हल निकाल लेता है। शिक्षा मानव जीवन की ऐसी गतिशील प्रक्रिया है जो निर्माण से लेकर पटिलकार से होती हुई अन्त में निर्वाण तक जाती है। इस प्रकार एक पूर्ण मानव के निर्माण में शिक्षा की अहम भूमिका है।[7] शिक्षा उस कल्प वृक्ष के समान है जिसमें मनोवाछित फल देने की शक्ति होती है। कोई राष्ट्र अथवा समाज तभी उन्नति कर सकता है जब वहाँ की शिक्षा पद्धति वहाँ के आर्थिक विकास में सहायक हो।

बच्चे परिवार के ही नहीं वरन् समाज एवं राष्ट्र के भविष्य की आधारशिला होते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ही किसी राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है। जिस देश का भविष्य देखना हो उस देश की बच्चों की आँखों में झाँक कर देख लो। बच्चा परिवार का सम्राट् होता है। माता–पिता को यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा बड़ों से अधिक संवेदनशील है वह अनुकरण के माध्यम से अधिक सीखता है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक व कलात्मक अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव

विद्यालय का वाह्य एवं आन्तरिक वातावरण छात्रों की शैक्षिक मनोवृत्तियों को सर्वाधिक प्रभावित करता है सभी छात्रों को विद्यालय का आन्तरिक वातावरण समान रूप से प्रभावित करता है किन्तु उनकी शैक्षिक मनोवृत्तियों समान नहीं होती है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। यथा छात्रों की वैयक्तिक भिन्नताएं, विद्यालय का आन्तरिक एवं वाह्य वातावरण जिसमें मुख्य रूप से परिवार समुदाय आदि आते हैं। अतः यह स्वाभाविक है कि बच्चों की शैक्षिक मनोवृत्तियों काफी मात्रा में वाह्य एवं आन्तरिक कारकों से प्रभावित होती रहती है। पारिवारिक परिस्थितियों को सामाजिक आर्थिक स्तर के रूप में नामित किया जाता है। जिसके अन्तर्गत पिता का व्यवसाय, माता–पिता का शैक्षिक स्तर एवं परिवार की आय इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामाजिक आर्थिक स्थिति का उचित विश्लेषण करना अत्यन्त दुरूह है। फिर भी जिस व्यक्ति की शिक्षा और आय निम्न स्तर की होती है उसे निम्न सामाजिक स्तर का व्यक्ति माना जाता है उसकी बौद्धिक योग्यता का विकास भी निम्न होता है। दूसरी ओर जो व्यक्ति अच्छी एवं उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा आय भी अच्छी हो तो वह समाज द्वारा पूर्ण विकसित माने जाते हैं।

ये जरुरी है कि शिक्षा व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर की जाये। विशेषतः अध्ययनरत् विद्याार्थियों के लिये, क्योंकि इन्ही विद्याार्थियों के हाथों में देश का भविष्य होता है। अतः इनके व्यक्तित्व को निखारने के लिए शिक्षण प्रकिया या व्यवस्था को इनके व्यक्तित्व के अनुरूप किया जाय। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्तित्व के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने से पहले हमें व्यक्तित्व को प्रभावित

करने वाले कारकों का ज्ञान हो। इन कारकों में व्यक्ति का सामाजिक आर्थिक स्तर एक महत्वपूर्ण कारक है, जो कि व्यक्तित्व के लगभग सभी पक्षों को प्रभावित करता है। हमारा समाज कई स्तरों में बंटा है तथा हमारे समाज में कई सम्प्रदायों के मानने वाले लोग रहते हैं। एक सम्प्रदाय को कई स्तरों में बांटा जा सकता है। इन स्तरों के कारण ही समाज में विकास को गति प्रदान की जा सकती है। प्राचीन काल से ही समाज को कई स्तरों में बांटा गया है।

वर्तमान समय में समाज को सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर बांटा गया है। अतः व्यक्ति के सामाजिक आर्थिक स्तर के ज्ञान हेतु उसके अध्ययन की आवश्कता प्रतीत होती है। इसके साथ–साथ हमें व्यक्ति की (सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की) शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति का ज्ञान होना चाहिये, क्योंकि शिक्षा प्रक्रिया में इनका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका उचित प्रयोग करके अध्यापक सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को अधिक अच्छे ढंग से सम्पादित कर सकता है। अतः उत्तम शैक्षिक उपलब्धि हेतु ये आवश्यक है कि विद्यार्थी के शैक्षिक अभिवृत्ति को समझकर उसके अनुसार शिक्षा की व्यवस्था की जाय। इसके साथ–साथ ये आवश्यक है कि हम विद्यार्थी की कलात्मक अभिवृत्ति के स्तर को समझें क्योंकि कलात्मक अभिवृत्ति को जानने व प्रभाव पूर्ण ढंग, से प्रयोग करने की योग्यता है जो दूसरों के प्रति हमारे सम्बन्धों को सार्थक रुप से प्रभावित करती है। प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक व आर्थिक स्थिति भिन्न–भिन्न होती है एवं शैक्षिक अभिवृत्ति पर स्थानीय परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। इससे बालकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा तथा शिक्षक अपने विद्यार्थियों के समस्याओं के समाधान हेतु संवेगों का अधिक सृजनात्मक उपयोग करने की क्षमता का विकास कर सकेगा। कलात्मक अभिवृत्ति यह व्यक्तिगत कुशलता है जो भिन्न–भिन्न व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न पायी जाती है। इसकी भिन्न–भिन्न मात्रा व्यक्ति के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है। शैक्षिक समायोजन हेतु व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं। अनेक संवेग अधिगम में परिवर्तनों व व्यक्ति के सामाजिक समायोजन को भी प्रभावित करते हैं। अधिक कलात्मक अभिवृत्ति वाले व्यक्ति कम कलात्मक अभिवृत्ति वाले व्यक्ति की तुलना में व्यवहार परिवर्तन करने में अधिक सफल होते हैं। शिक्षा के सभी स्तरों के विद्यार्थियों से यह अपेक्षा रखी जाती है कि वे कलात्मक अभिवृत्ति को समझते हुए अपना सर्वांगीण विकास करें। बुनियादी शिक्षा हमारे देश के विकास के लिये महत्वपूर्ण है। इसलिये छात्रों के उत्तम विकास के लिये विद्यार्थियों में कलात्मक अभिवृत्ति होना अत्यन्त आवश्यक है।[8]

निष्कर्ष

शिक्षक से ये आशा की जाती है कि वो छात्रों–छात्राओं में सामाजिक कुशलता, सकारात्मक अभिवृत्ति, सृजनात्मक चिन्तन का विकास करे एवं इन सभी के विकास के लिये शिक्षक को भी शैक्षिकरूप से दृढ़ होने की आवश्यकता होती है। ये आवश्यक नहीं है कि उच्च बुद्धि–लब्धि वाला विद्यार्थी शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति रूप से दृढ़ हो। संवेगात्मक रूप से स्थिर विद्यार्थी व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार अनुकूल दिशा में विकास कर सकता है क्योंकि शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति ज्ञान को आनन्दायक बनाने में सहायक होती है। कक्षा शिक्षण में ज्ञान एवं अधिगम विधि की प्रक्रिया ठीक ढंग से चलाने के लिये सम्प्रेषण, धैर्य, लगन आदि गुणों की आवश्यकता होती है एवं ये क्रियायें शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति से ही सम्बन्धित होती है इसलिये विद्यार्थी में शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति होना आवश्यक होता है। अनुसंधान के द्वारा यह ज्ञात किये जाने की आवश्यकता है कि संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति को सामाजिक आर्थिक स्थिति किस प्रकार से प्रभावित करती हैं। शैक्षिक एवं कलात्मक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्थिति के मध्य किस तरह का प्रभाव एवं सम्बन्ध है। शोध के बाद शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक–आर्थिक स्तर के सम्बन्ध के विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना, यह सभी बातें वर्तमान शोध के अन्तर्गत आती है। अतः इस क्षेत्र में शोध की आवश्यकता है जिससे अधिगम प्रक्रिया को एक मजबूत आधार प्रदान किया जा सके।

सन्दर्भ

1. सचदेवा, एम.एस., शर्मा के.के., बिन्दल शिवानी, साहू पी.के.(1999), शिक्षा के दार्शनिक,सामाजिक एवं आर्थिक आधार, सेंचुरी पब्लिकेशन्स, पटियाला, पृष्ठ.सं. 23.

2. पाठक, पी.डी. एवं त्यागी (2005).शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त, विनोद पुस्तक जी.एस.डी.(2005), मन्दिर, आगरा, पन्द्रहवाँ संस्करण, पृष्ठ.सं. 198.
3. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2002). शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, 11, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, पृष्ठ 110.
4. भटनागर, सुरेश (1989). शिक्षा मनोविज्ञान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृष्ठ 24.
5. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2007), भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ.सं. 55.
6. माथुर, एस.एस. (2002). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृष्ठ 24.
7. अग्निहोत्री, रविन्द्र (1988), भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्या, दिल्ली रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंसेज, पृष्ठ संख्या 126.
8. बैनर्जी शर्बरी (2012), दृश्य एवं प्रदर्शन कला द्वारा शिक्षण, *प्राथमिक शिक्षक,* आई.एस.एस.एन. 0970–9312, जुलाई–अक्टूबर 2010, वर्ष–34, अंक 3–4, पेज 36–40.

❐❐❐

RESEARCH INQUIRY